12.9.67 117

प्रात: क्लास ओमशान्ति 12-9-67

ओमशान्ति। बच्चों को पहले2 बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।मीठे2 बच्चे जब यहाँ बैठे हो तो अपन को आत्मा समझो।और कोई तरफ बुधि नहीं जानी चाहिए।यह तुम बच्चे जानते हो हम आत्मायें हैं।पार्ट हम आत्मा बजाती हैं इस शरीर द्वारा।आत्मा अविनाशी शरीर विनाशी है।तो तुम बच्चों को देही अभिमानी बन बाप बाप की याद में रहनी हैं।हम आत्मा हैं, चाहे तो इन आरगन्स से काम लियो वा न लियो।अपन को शरीर से अलग समझना हैं।बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। देह को भूल जाओ।हम आत्मा इनडिपेन्ड हैं।हमको एकबाप की और कोई को याद न करना है।जीते जी मौत की अवस्था में रहना है।हम आत्मा का योग रहना है अब बाप के साथ।बाकि तो दुनिया से, घर से मर गये। कहते हैं आप मरे तो मर गई दुनिया।अब जीते मर गये हैं।हम आत्मा शिव बाबा के हैं। शरीर का भान उड़ाते रहना चाहिए।बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ और मुझे याद करो।शरीर का भान छोड़ो।यह तो पुराना शरीर है ना।पुरानी चीज को छोड़ा जाता है।अपन को अशरीरी समझो।अब हमको बाप को याद करते2 बाप के पास जाता है।ऐसे करते2 फिर तुमको टेव पड़ जावेगी।अभी तो हमको घर जाना है।फिर हम इस पुरानी दुनिया को याद क्यों करें।एकान्त में बैठ अपने से ऐसे2 अपने साथ मेहनत करनी है।भक्ति मार्ग में भी अन्दर कोठरी में बैठ माला आद फेरते हैं पूजा करते हैं।तुम भी एकान्त में बैठ यह कोशिश करो तो टेव पड़ जावेगी।तुमको मुख से तो कुछ बोलना न है।इस में है बुधि की बात। शिव बाबा तो है सिखलाने वाला।उनको तो पुरुषार्थ नहीं करना है। पुरुषार्थ यह बाबा करते हैं।जैसे यह पुरुषार्थ करते हैं, वह फिर तुम बच्चों को भी सिखलाते हैं।जितना हो सके ऐसे बैठ कर ख्याल करो। अभी हमको जाना है।अपने घर। इस शरीर को तो यहाँ छोड़ना है।बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अन्दर यह चिन्तन चलना चाहिए।बा[illegible] में कुछ बोलना न है।भक्ति मार्ग में भी या ब्रह्म को, तत्व को, या कोई शिव को भी याद करते हैं परन्तु वह याद कोई पुरुषार्थ नहीं है।बाप का परिचय ही नहीं है।तो याद कैसे करे।तुमको अब बाप का परिचय मिला हुआ है।सबेरे उठ कर ऐसे अपन साथ बातें करते रहो।विचार सागर मंथन करते रहो।बाप को याद करो।बाबा हम अभी आया कि आया आप के सच्चे गोद में वह है रूहानी गोद।गोद नहीं कहेंगे।वह तो रहने का स्थान है।तो ऐसे2 अपने साथ बातें करनी चाहिए।जैसे चर्च अपने से बाते करते हैं वह तो मुख से आवाज करते हैं। तुम अन्दर में अपने से बाते करो।बाबा आया हुआ है।बाबा कल्प2 आकर हमको राजयोग सिखाते हैं।बाप कहते हैं मुझे याद करो और चक्र को याद करो स्वदर्शन चक्र धारी बनना है।बाप में भी सारा ज्ञान है ना। वह फिर तुमको देते हैं।तुमको त्रिकालदर्शी बनना है।तीनों कालों का अर्थात आद मध्य अन्त को तुम जानते हो बाप भी है, परमात्मा। उनको शरीर नहीं है।अब इस शरीर में बैठ तुमको समझाते हैं।यह वन्डरफुल बात है ना।भागीरथ पर विराजमान होंगे तो जरूर दूसरी आत्मा है ना। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है।नम्बर वन पावन वह ही फिर नम्बर वन पतित बनते हैं।यह अपन को भगवान या विष्णु आद तो कहते नहीं।यहाँ एक भी आत्मा पावन है नहीं।सब पतित ही हैं।तो बाबा बच्चों को समझाते हैं ऐसे2 विचार सागर मंथन करो तो इनसे तुमको खुशी भी रहेगी।इसमें एकान्त भी जरूर चाहिए।एक की याद में शरीर का अन्त होता है।उनको कहा जाता है एकान्त।यह चमड़ी छूट जावेगी।सन्यासि भी ब्रह्म की याद में वा तत्व की याद में रहते हैं।उस याद में रहते2 शरीर का भान टूट जाता है।बस हमको ब्रह्म में लीन होना है।ऐसे बैठ जाते हैं। तपस्या में बैठे2 शरीर छोड़ देते हैं।भक्ति में तो मनुष्य बहुत धके खाते हैं।इसमें धके खाने की बात नहीं।याद में ही रहना है।मित्र सम्बन्धी को कोई याद न रहे।गृहस्थ व्यवहार में तो रहनी ही है।बाकि टाईम निकालना है। स्टूडेन्ट को पढ़ाई का शौक होता है ना।यह पढ़ाई है। अपन को आत्मा न समझने से बाप, टिचर गुरु सब को भूल जाते हैं।एकान्त में बैठ ऐसे2 बाते करो।

करो। गृहस्थ में रहते वैवरेशन ठीक नहीं रहता।अगर अलग प्रबन्ध है तो एक कोठरी में एकान्त में बैठ जाओ। माताओं को तो दिन में भी टाईम मिलता है। बच्चे आद स्कूल में चले जाते है।जितना टाइम मिले यही कोशिश करते रहो तुमको तो एक घर है।बाप के तो कितने ढेर के ढेर दुकान हैं।और ही वृधि होती जाती है। कितने समाचार आते हैं।मनुष्य को धंधे आद की चिन्ता होती है।तो नींद भी फिट जाते है। यह व्यापार है ना।कितना बड़ा सराफ है।कितने बड़ी मटा-सुटा करते है।पुरानी शरीर आद लेकर नया देता है।सब को रास्ता बताते है।यह भी धंधा उनको करना है।यह व्यापार तो बहुत बडा है।व्यापारी को व्यापार का ही ख्याल रहता है।बाबा ऐसे2 प्रैक्टीस करते है।फिर बतलाते है ऐसे2 करो।जितना तुम बाप की याद में रहेंगे तो आटोमेटकली नींद फिट जावेगा।कमाई में आत्मा को बहुत मजा औवषेगे।कमाई के लिए मनुष्य रात भी जगते हैं।सीजन में सारी रात भी दुकान खुला रहता है।तुम्हारी कमाई रात और सबेरे अच्छी होती है। जितना याद में रहेंगे,स्वदर्शन चक्रधारी बनेंगे, त्रिकालदर्शी बनेंगे 2। जन्म लिये धन इकठा करते हो।मनुष्य शाहुकार बनने लिए पुरुषार्थ करते है ना।तुम भी बाप को याद करेंगे विकर्मविनाश होंगे।बल मिलेगा।ऐसे2 अपने साथ बातें करनी है।बाबा जो पुरुषार्थ करते है वह बतलाते है।शिव बाबा तो है ही सिखलाने वाला। याद की यात्रा पर न रहेंगे तो बहुत घाटा पड़ जावेगा।क्योंकि सिर पर पापों का बोझ बहुत है।अब जमा करना है।एक तो याद करना है।और त्रिकालदर्शी बनना है।यह मिलकियत आधा कल्प लिए इकठी करनी है।यह तो बहुत वेल्युएबल है।विचार सागर मंथन कर रत्न निकालनी है।बाबा जैसे खुद करते है बच्चों को भी युक्ति बतलाते हैं।कहते है बाबा माया के तूफान बहुत आते है।बाबा कहते है हमको सबसे जास्ती आती है।अज्ञान काल में भी ऐसे तूफान नहीं आते थे। जितना हो सके अपनी कमाई करनी है।यह ही काम अपनी है।एकान्त में बैठ बाप को याद करनी है।प्रभात तो हैसर्विस भी मंदिरों आद में बहुत कर सकते हैं। के जार लगा रहे।सभी समझ जावेंगे यह रूहानी मलेट्री है।तुम लिखते भी हो 9 वर्ष के अन्दर स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं।आदी सनातन देवी देवता धर्म था अब नहीं है।जो फिर स्थापन करते हैं।यह लक्ष्मी-नारायण एमआवजेक्ट है ना।कोई समय यह ट्रन्स लाइट का चित्र बैटरी सहित तुम उठाये कर प्रकरमा देंगे।और सब को कहेंगे यह राज्य अब 8 वर्ष के अन्दर ,7 वर्ष के अन्दर हम स्थापन कर रहे है।यह तावुत सब से फस्ट क्लास तुम्हारा निकलेगा।यह चित्र बहुत नामी ग्रामी हो जावेंगा।बाबा को विचार आता है इन से भी बड़ा बनाया जाये।तुम्हारी एमआवजेक्ट भी है नर से नारायण बनने की। आदी सनातन देवी देवता धर्म था ना।दूसरा एक तो नहीं था।उन्हों की राजधानी थी ना।यह स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं।अब बाप कहते है मन्मनाभव।बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाबा ऐसा पलैन बनाये रहे है। परन्तु यह बनने में भी टाईम लगता है।कहते है गीता का सप्ताह मनावेंगे। यह सब पलैन कल्प पहले मुआफिक बन रही हैं।प्रकरमा में यह चित्र लेना पड़ेगा।इनको देख कर तो सब खुश होंगे।तुम कहेंगे बाप को और इस वर्सा को याद करो।मन्मनाभव।यह गीता के अक्षर है ना।भगवान शिव बाबा है।वह कहते है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होवे।त्रिकालदर्शी बनो।84 के चक्र को याद करो तो यह बन जावेंगे।बैज भी तुम सोगात देते रहो।शिव बाबा का भंडारा है तो सदैव भरपुर रहे। आगे चल कर बहुत सर्विस होगी।एमआवजेक्ट कितनी क्लियर है।इन्हों के राज्य में एक ही राज्य,एक ही धर्म था। बहुत शाहुकार थे।मनुष्य चाहते है एक धर्म ,एक राज्य ,एक भाषा हो। मनुष्य जो चाहते वह असर दिखाई पड़ता है।फिर समझेंगे यह तो ठीक कहते है।एक ही राज्य 100%पवित्रता सुख शान्ति सम्पति इनके राज्य में थे।सो अब फिर से स्थापन कर रहे हैं।फिर तुमको खुशी भी रहेगी।याद में रहने से ही तीर लगेगा।शान्ति में रह थोड़े ही अक्षर बोलनी है।जास्ती आवाज नहीं।गीत कविताएँ आद कुछ भी बाला पसन्द नहीं करते है।बाहर वाले मनुष्यों के साथ ऐसे न करनी है।तुम्हारी बात ही और है।

अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बस। बाबा सालोगन भी अच्छे2 बनाये देंगे। जो मनुष्य पढ़ कर जागे। बच्चे वृधी को पाते रहते हैं। खजाना तो भरपुर रहता है। बच्चों का दिया हुआ फिर बच्चों का ही काम आता है। बाप तो पैसे नही ले आते हैं ना। तुम्हारी चीज ही तुम्हारी काम में आती है। भारतवासी समझते हैं कि हम बहुत कुछ सुधार कर रहे हैं। 7 वर्ष के अन्दर इतना अनाज हो जायेगा। यह होगा। अनाज कबी कब दिक्कत नहीं होगी। और तुम जानते हो ऐसे हालत होगी जो अन्न खाने के लिए नहीं मिलेगा। एक तरफ कन्ट्रोल बन्द करते हैं दूसरी तरफ भाव बढ़ाये देते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम 2। जन्म लिए अपना राज्य, भाग्य पाये रहे है। यह थोड़ी बहुत तकलिफ तो सहन करना ही हैं। कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। अतिइन्द्रिय सुख गोप-गोपियों का गाया जाता है। ढेर बच्चे हो जावेंगे। जो भी सैप लिंग वाले होंगे वह आते जावेंगे। झाड़ यहां ही बढ़ना है ना। स्थापना हो रही हैं? और धर्मों में ऐसे नहीं होता। वह तो उपर से आते हैं। जैसे कि झाड़ स्थापन हुआ ही पड़ा है। नम्बरवार आते जावेंगे। तकलिफ कुछ नहीं। उपर से आये कर पार्ट बजाना है। इसमें महिमा की बात नहीं। धर्म स्थापक के पिछाड़ी आते रहते हैं। वह शिक्षा क्या देंगे। सदगति की? कुछ भी नहीं। यहां तो बाप भविष्य देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। संगम युग पर। सैप लिंग लगाते हैं ना। पहले पौधों को कुन्डो में लगाये फिर नीचे लगाये देते हैं। वृधी होती जाती हैं। तुम भी अभी पौधे लग रहे हो। फिर सतयुग में वृधी को पाये राज-भाग पावेंगे। तुम नई दुनिया की स्थापना करते हो। मनुष्य समझते हैं अजन कलयुग में बहुत वर्ष पड़े हैं। क्योंकि शास्त्रों में लाखों वर्ष लगाये दिया है। समझते हैं कलयुग में अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। फिर बाप आये नई दुनिया बनावेंगे। कई समझते हैं यह वही महाभारत लड़ाई है, गीता का भगवान जरूर होगा। तुम बतलाते हो कृष्ण तो था नहीं। सारी दुनिया इन बातों में मुंझी हुई है। बाप के बदली नाम डाल दिया है कृष्ण का। बाप ने समझाया है कृष्ण तो 84 जन्म लेते हैं सब डिफरेन्ट। एक फिचरस न मिले दूसरे से। तो यहां फिर कृष्ण कैसे आवेगा। कहते हैं 40 हजार वर्ष बाद भगवान आता है। फिर कृष्ण द्वापर में तो हुआ नहीं। कोई भी इन बातों पर विचार नहीं करते है। तुम समझते हो कृष्ण तो सतयुग का प्रिन्स हैं। वह फिर द्वापर में कहां से आवेगा। कृष्ण थोड़े ही सर्वव्यापी हैं। इस लक्ष्मी नारायण के चित्र को देखने से ही समझ में आ जाता है शिव बाबा यह वर्सा दे रहे हैं। सतयुग का स्थापना करने वाला बाप ही है। तुम रचना को भी जान गये हो रचता बाप द्वारा। यह गोला, झाड़ आद की चित्र कोई कम थोड़े ही हैं। एक दिन सब चित्र तुम्हारे पास ट्रन्सलाईट की बन जावेंगी। फिर सब कहेंगे हमको ऐसे ही चित्र चाहिए। बाबा प्रबन्ध कर रहे हैं। ट्रन्स लाईट की चित्र बनवाने तो फिर विहंग मार्ग की सर्विस हो जावेंगी। तुम्हारे पास ग्राहक इतने आवेंगे जो फुर्सत न हो रहेगी। ढेर आवेंगे। बहुत खुश होंगे। दिन प्रति दिन तुम्हारा फर्स्ट भरता जाता है। ड्रामा अनुसार जो फूल बनने वाले होंगे उनको टच होगा। तुम बच्चों को ऐसे नहीं लिखना है कि बाबा इनको वृधी को टच करेंगे। टच कोई बाबा को थोड़े ही करना है। समय पर आपे ही टच होगा। बाप तो रास्ता बतावेंगे या टच करेंगे। बहुत बच्चियां लिखती है हमारी पति की वृधि को टच करो। ऐसे सब की बुधियों को टच कर दे फिर तो सब स्वर्ग में इकट्ठे हो जावेंगे। पढ़ाई की ही मेहनत हैं। तुम खुदाई खिदमतगार हो ना सच्ची2। बाबा पहले से ही बताये देते हैं क्या2 करना है। ऐसे2 चित्र ले जाने पड़ेंगे। सीढ़ी का चित्र ले जाना पड़े। ड्रामा अनुसार स्थापना तो होनी ही है। बाबा सर्विस के लिए जो डैरेक्शन देते है उस पर भी ध्यान देना है। बाबा कहते है बैजेज किसम2 के लाखों बनाओ। कोई को भी समझाकर यह देते जाओ। ट्रेन की टिकटें ले कर 100 मिल तक सर्विस कर आओ। बाप कहते है अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। एक गाड़ी से दूसरे में, फिर तीसरे में। बहुत सहज है। बच्चों को सर्विस का शौक रहना चाहिए। चित्र जहां बन सकते हैं तो बनाने की कोशिश करो। सीढ़ी, लक्ष्मी-नारायण का चित्र यह पहले मुख्य चित्र हैं। ओम